RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

कविता के नये इलाके

सत्यनारायण कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विष्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 12 June 2019

Keywords
नये, इलाके, *मार्क्सवादी विचारधारा*, अरुण कमल

***Corresponding Author**
Email: satyanarayan280282@gmail.com

ABSTRACT

कविता साहित्य का संवेदनशील विधा है। शायद इसी कारण बाज़ारीकरण ने कविता के सामने कई चुनौतियाँ व संघर्ष के रूप में पैदा की है। कविता के इन्हीं चुनौतियों और संघर्षों को अरुण कमल ने अपनी कविताओं में उकेरना का काम किया है। चूँकि अरुण कमल (मूल नाम–अरुण कुमार उपाध्याय) एक मार्क्सवादी विचारधारा के संवाहक कवि हैं, प्रगतिशील व समकालीन भी हैं। इनकी काव्य–यात्रा बेहद रोचक है। यों तो इनकी सारी कविताएँ समकालीन संवेदना से लवरेज़ है, पर 'नये इलाके में' की कविता की अपनी दुनिया है, अपने रंग–ढंग हैं। मुझे लगता है समकालीन वातावरण में घटित घटनाओं, उभरती सामाजिक संवेदनाओं, विचारों आदि को 'नये इलाके में' झाँकने का प्रयास है। यह तभी संभव हो सकता है जब कवि नये इलाके में खड़ा होगा। तटस्थ होगा।
कवि आशंकित है अपनी आज़ादी को लेकर। उन्हें लगता है कि हमारे पूर्वजों द्वारा दी गई कुर्बानी सार्थक नहीं हुई है अब तक। कारण कि समानता की बात केवल राजनयिकों की काग़जी घोड़ा है। आज भी वही वेदना, वही हक़मारी, वही चित्कार है। नये इलाके में खड़े होने की जिद और वहाँ से कुछ हासिल करने की आकांक्षा कवि को ठूँठ बना दिया है–

"नोक महीन से महीन
करने की जिद में इतना
छीलता गया पेंसिल
कि अंत में हासिल रहा
ठूँठ।"

प्रस्तावना

कविता साहित्य की संवेदनशील विधा है। समाज में घटित घटनाओं का कोलाहल की संवेदनात्मक प्रतिफलन कविता में देखा जा सकता है। राजकुमार कुंभज कविता के बारे में लिखते हैं– "कविता घनघोर अंधकार में रोशनी का एक ज़र्रा है। ख़ामोशी का आसमान तोड़ने के लिए कविता एक पिन है। कविता दरअसल तानाशाह के कान में रेंगती जूँ हैं।" 'कविता क्या हैं?' (नामवर सिंह) में कविता की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि "कविता सहज आंतरिक अनुशासन से युक्त अनुभूतिजन्य सघन लयात्मक शब्दार्थ है, जिसमें सह–अनुभूति उत्पन्न करने की यथेष्ट क्षमता निहित रहती है।"[1] कविता का स्वरूप दिनों–दिन परिवर्तित हो रहा है। एक तरफ भूमण्डलीकरण और बाज़ारवाद के दौर में जहाँ कविता प्रतिरोध का सक्षम व दक्ष हथियार है, वहीं दूसरी ओर बाज़ारीकरण ने कविता के सामने कई चुनौतियाँ व संघर्ष के रूप पैदा की है। एडोर्नो कहते हैं– "हमारे इस दौर में कविता किसी नई अवधारणा को बनाने का काम नहीं करती बल्कि वह 'वास्तव' और 'विचार' के ठीक बीच बैठे हुए एक बेहद बुनियादी विरोधाभास को उठाती है। यह विरोधाभास ही उसका सार तत्त्व है।"

'कान्टेम्पररी' का हिन्दी पर्याय है– 'समकालीन शब्द'। 'समकालीनता' को लेकर विनोद कुमार शुक्ल की एक पंक्ति है कि 'घड़ी देखना समय देखना नहीं होता।' कहने का तात्पर्य यह हुआ कि समकालीनता का निर्धारण घड़ी या कैलेंडर से करना अनुचित है। समकालीनता का तीन अर्थ रवीन्द्र भ्रमर ने बताया है–

(1) काल विशेष से संबद्ध
(2) व्यक्ति विशेष के कालयापन से संबद्ध
(3) साहित्य समाज या प्रवृत्ति विशेष से संबद्ध, कालखण्ड है।

समकालीन कविता लोक–जीवन से साक्षात्कार की कविता है। दैनिक जीवन की अनुभूतियों को बड़ी सहजता से समकालीन कविता अभिव्यक्त करती है। समकालीन कविता (8वें दशक) में कवियों व कविता में सपाटबयानी को लेकर कवि स्वयं कहते हैं– "यथार्थ यानी यही जीवन, जो है, पूरा का पूरा। शुरू से अब तक, आगे तक। सब। अखण्ड। यथार्थ कोई स्थानापन्न नहीं। शब्दों को पूर्णतः उनके अर्थों से खाली नहीं किया जा सकता। कोई चाहे या न चाहे, शब्द व्यवहार करने का मतलब ही है, यथार्थ से वास्ता।"[2] कविता समकालीन यथार्थ की जटिलता को समग्रता एवं सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त करती है। इस आधार पर समकालीन कवि अरुण कमल काफी चर्चित हैं।

अरुण कुमार उपाध्याय एक मार्क्सवादी विचारों के संवाहक कवि हैं। प्रगतिवाद को समर्थन देने वाले प्रगतिशील कवि हैं। स्वयं 'समकालीनता' की परिभाषा देते हुए लिखते हैं– "आज समकालीनता का अर्थ है पूँजी, बाजार, स्वार्थ और अमानवीकरण के विरूद्ध जाग्रत होना। आज मनुष्य बेहद अकेला होता जा रहा है। पर यह ऐसा अकेलापन है जिसमें एकांत नहीं है। उसकी निजता, स्वायत्तता और स्वाधीनता का उल्लंघन हो रहा है। सामूहिकता में ही वास्तविक एकांत है। आज कविता उसी सामूहिकता उसी एकांत की खोज है।" सीधे अर्थों में कहें तो अरुण कमल एक साथ मार्क्सवाद का

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संवाहक, प्रगतिवाद का समर्थन करने वाला समकालीन प्रगतिशील कवि हैं। मेरी दृष्टि में अरुण कमल का जीवन कबीर का जीवन है। 'जैसा अंदर वैसा बाहर' ये चीज़ उनकी कविताओं में भी देखने को मिलती है। भावों की सहजता, शब्दों की सरलता इनके छोटे–छोटे कविता शीर्षकों में देखने को मिलता है। अरुण कुमार की स्वयं की स्वीकृति है– "इधर की कविताएँ अधिकांशतः छोटे–छोटे विषयों और आशयों की कविताएँ हैं। स्थिर, शांत और सौम्य। घर–परिवार–गृहस्थी–प्रकृति–लोकजीवन के सुकोमल दृश्य और बिम्ब जो दृश्य पटल पर जरा–सा ठहर कर विसर्जित हो जाते हैं। इधर की कविता में लगातार बढ़ते गये हैं।"

अरुण कमल की काव्य–यात्रा बेहद रोचक है। इनकी अब तक कुल छह काव्य–संग्रह पाठकों के हाथों में उपस्थिति पा चुके हैं। उनकी काव्य–यात्रा का प्रतिफलन है– 'अपनी केवल धार' (1980), 'सबूत' (1989), 'नये इलाके में' (1996), 'पुतली में संसार' (2004), 'मैं वो शंख महाशंख' (2012) और 'योगफल' (2019) आदि। इसके अलावे भी तीन काव्य–संग्रह उपरोक्त छह काव्य–संग्रहों के गर्भ से सृजित हैं– 'कवि ने कहा' (कवि की स्वयं चुनी हुई कविताएँ), 'प्रतिनिधि कविताएँ' व पचास कविताएँ आदि।

'नये इलाके में' प्रथम दो कविता–संग्रह से कम और अंतिम तीन कविता–संग्रह से अधिक ऊँचाई के बीच खड़ा है। मुझे लगता है इसी जगह अर्थात् नये इलाके में खड़े हैं अरुण कमल। अपनी केवल धार का सबूत देते हुए नये इलाके में खड़े अरुण कमल अपनी पुतली में संसार को बसाये मैं वो शंख महाशंख में उपस्थिति दर्ज कर योगफल की चाह में हैं। 'नये इलाके में' काव्य–संग्रह इनकी समग्र काव्य–संग्रहों में दोआब की तरह है। व्यक्ति के जीवन में हर क्षण नया है। उसी तरह वे जितनी कविता या कविता–संग्रह रच–बस दें। वे हर क्षण नये इलाके में ही खड़े पाये जायेंगे।

'नये इलाके में' अरुण कमल का तीसरा काव्य–संग्रह है। जिसका प्रकाशन वर्ष है – 1996 ई0। इस संग्रह में कुल पचपन कविताएँ संकलित हैं। इसी काव्य संकलन के लिए अरुण कमल को 1998 का साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। 'नये इलाके में' संकलित तमाम कविताओं में इन्होंने जीवन की विभिन्न छवियों को उकेरने का हद तक प्रयास किया है और सफलता भी मिली है। कविताओं का प्रसंग भले ही छोटे–छोटे है पर जीवन से इनका गहरा संबंध है। इसकी प्रमाणिकता वीरेन्द्र मोहन के शब्दों में– "यह अकारण नहीं कि अरुण कमल की कविता अपनी सादगी के लिए पहचानी जाती है। यह एक ऐसा रस है जो हमें कविता के और नजदीक लाता है। अरुण कमल की कविता में सूक्तियाँ बनने की क्षमता है और वे सूक्ति की तरह प्रयोग की जाती हैं। कई बार लगता है कि यह कविता इतने कम शब्दों में अपनी बात कैसे कह लेती है। यह मितव्ययता ही अरुण कमल की कविता को एक गंभीर कविता भी बनाती है। यह गंभीरता है जीवन की और समाज की स्थितियों के मध्य मनुष्य की जीवन गाथा की और स्वयं कवि की अपनी भीतरी दुनिया की भी।"[3] जीवन नयेपन का ही नाम है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत 'नये इलाके में' काव्य–संग्रह पर डॉ0 नामवर सिंह ने कहा है– "अरुण कमल का 'नए इलाके में' काव्य–संग्रह मेरी नजर में इस दशक का सबसे महत्वपूर्ण संकलन है।"

प्रगतिशील कवि अरुण कमल के काव्य–संग्रह 'नये इलाके में' की प्रथम कविता ही है–'नए इलाके में । इस कविता में मनुष्य की भौतिक उन्नति, शहरीकरण की मानसिकता, परिवर्तन की तेज गति के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य की आत्मीय संवेदन के ह्रास को चिह्नित किया गया है। नये क्षेत्र में जहाँ नित्य नये मकान बनते हैं, वहीं पुराने निशानों को मिटाकर नया भूगोल रचा जाता है। वैसी स्थिति में सामान्य मनुष्य का मनोवांछित लक्ष्य से चूक जाना स्वभाविक है। किसी स्थान या व्यक्ति की पहचान उसके परिवेश और उसके संसर्ग के संदर्भ में ही होती है जब परिवर्तन की गति तेज होती है तब स्मरणशक्ति का ह्रास हो जाता है। वैसे यह शताब्दी ही स्मृतियों के ह्रास का है। अब तो दुनिया एक दिन में ही पुरानी पड़ जाती है। सबसे बड़ी विडंबना है–मनुष्य की अपनी पहचान का खो जाना।

"यहाँ रोज कुछ बना रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ"[4]

बदलते परिवेश में पूर्व के सबूत भ्रमजाल बन जाता है और व्यक्ति लक्ष्य से पीछे रह जाता है–

"और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ या दो घर आगे ठकमकाता"

संग्रह की दूसरी ही कविता है–'यह वो समय'। यह कविता प्रगतिशीलता का जीता–जागता मिशाल है। कवि इस दौर के उस समय की ओर इशारा करते हैं, जहाँ पुरातन शेष और नवीन अशेष रूप ग्रहण करना चाहता है। नवीनता का उदय कवि के हाथों होना है। जहाँ पुराने के लिए उदासी और नये के लिए आशा की व्यग्रता भी है। तभी तो लिखते हैं कवि–

"यह वो समय है जब
शेष हो चुका है पुराना
और नया आने को शेष है।"[5]

'शेली के प्रति' कविता में कवि बाज़ारवाद के भयावह दुष्परिणाम दिखाया है। बाज़ारीकरण के इस दौर में जीवन भार के समान प्रतीत होता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

"आज तुम्हारे जन्म दिन की रात
बहुत अंधकार है और एक भी मोमबत्ती
नहीं मेरे पास
अपनी पीठ के सिवा नहीं कोई टेक
अपनी आँख के सिवा न कहीं प्रकाश
जीवित होना आज बहुत बड़ा भार है
युवा होना भीषण अभिशाप"[6]

यात्रा कवि की पहचान है। इसी कारण इस काव्य–संकलन में यात्रा को लेकर कई कविताएँ रची गयी हैं। यह रचन कहीं–न–कहीं कवि के यात्रा–प्रेम को दर्शाती है। उदाहरणतः 'हाट', 'बात', 'रात का ढ़ावा', 'वृत्तांत' आदि नये–नये इलाकों की यात्राएँ हैं। 'अपनी केवल धार' का भाव 'हाट' कविता में दिखता है।

''मेरे पास न पूँजी थी न पण्य
मैं बाट भी न था कि हाट के आता काम
न पाप कमाया न पुण्य न ही रहा अक्षत
दिन भर घूमता ढली देह लिए लौटा धाम''

यात्रा के दौरान कवि ने देखा– लूट–मार, ज़हर–खुरानी, छिना–झपटी यानी मनुष्य, मनुष्य नहीं पशु का होना। मनुष्य बेशर्मी की चादर में लिपट टूकुर–टूकुर देखता है और राह चलते अकेले–अकेले कुल्फी चाटता है बच्चों के सामने।

''अब मुझे क्या हो गया है
बच्चों के सामने कुल्फी चाटता चलता हूँ बीच बाज़ार
कमीज की बाँह बार बार झाड़ता केश रंगता ब्लू फिल्में
देखता
जेब में कंघी हाथ में रूमाल''

आदमी का सच बोलना तो अलग, मुँह खोलना भी आज के दौर में गुनाह होता है। इसकी पुष्टि 'वाकय' कविता से हो जाती है–

''आज मेरे मुँह से बस इतना निकला
'रेल का भाड़ा बेतरह बढ़ गया है'
इतना कहना था कि सामनेवाले ने लोक ली बात
पहले तो गरजा, 'आप ही जैसे लोग
सरकार को बदनाम करते हैं,
फिर गाली पर उतर आया
और जब मैंने टोका तो सीधे
सटा दी पिस्तौल
और कोई कुछ नही बोला।''

आज व्यक्ति बदलते परिवेश में इतना भयाक्रांत है कि अर्थी उठाने के लिए चार लोग की जरूरत होती है पर तीन से काम चलाना पड़ा। अपराधी छूट्टे साँढ़ की की तरह बेखौफ घूमता है और मन चाहा कार्य करता है।

''पर गाँव का एक भी आदमी नहीं आया
सबने सोचा डकैत बुरा मान जायेंगे
तब तीन जन ने अर्थी उठायी
और बेटे को बाप ने आग दी
किस्सा गया वन में
सोचो अपने मन में।''

'जैसे' मेरी दृष्टि से सबसे अधिक संवदेनशीन कविता है। 'अनसूना करना' जैसे मानो मनुष्य की प्रवृत्ति हो गई हो। गोलियों की आवाज और पृथ्वी पर चीख उसको सुनाई नहीं देती है, जिसने कीवाड़ अंदर से बंद कर लिया है–

''इस तेज बहुत तेज चलती पृथ्वी के अंधड़ में
जैसे मैं बहुत सारी आवाज़ें नहीं सुन रहा हूँ
वैसे ही तो होंगे वे लोग भी
जो सुन नही पाते गोली चलने की आवाज़ ताबड़तोड़
और पूछते हैं– कहाँ है पृथ्वी पर चीख़ ?"

'सुख', 'शोक', श्रद्धांजलि', 'संयोग', 'ऑपरेशन के बाद' 'हासिल', 'भय', अकेले ताड़ की', गाथा', आदि छोटी–छोटी कविताओं में अरुण कमल ने अपने जीवन के अनेक विचारों, सामाजिक यथार्थ व अनुभवों को पिरोया है। इसकी पुष्टि कवि स्वयं करते हैं। उन्हीं के शब्दों में– "नये इलाके में' की कविताएँ उस दौर में लिखी गयी जब हमारे समाज में बहुत बड़े परिवर्तन हो रहे थे, जो अभी भी जारी है। जैसे सोवियत संघ और समाजवाद का विघटन, भारत में विकास का ऐसा सिलसिला जिसने गरीबों को और गरीब बनाया और मनुष्यता के लिए लगातार जगह कम होती गयी। यही समय भारतीय समाज का सर्वाधिक हिंस्र और बर्बर समय भी रहा। इसके अलावा मेरा निजी जीवन भी बहुत मुश्किलों और यातना से गुजरा।"[8]

बिम्ब की दृष्टि से अगर 'नये इलाके में' कविता–संग्रह का मूल्यांकन किया जाय तो इसमें पूर्व के कविता–संग्रहों से बिल्कुल अलग नये बिम्ब को लिया है। जैसे 'सोये में चलना' कविता।

"बिना कुछ बोले
मैं लौट आता हूँ उसके घर
जहाँ फाँसी के हुक्म का इंतजार कर रही है
एक बहुत बुढ़ी माँ!"

अरुण कमल वाकई अंधकारमय दुनिया के लिए एक 'लौ' हैं। जहाँ लौ पीछे थी और अंधेरा आगे।

"पीछे थी रोशनी आगे अँधेरा
जिधर मुझे जाना था।"

लगभग बहत्तर वर्ष आजादी को मिले हो गया है। कई राजनीतिक दल आये और गये। कई राजनयिक काल के गाल में समा गये। मगर आज भी कवि को लगता है कि 'हम

पूर्ण आजाद नहीं हैं। 'समानता' की बात केवल कागज़ी घोड़ा है जो लिखे और पोते जाते हैं। कवि प्रगतिशील भावना से आशा की ज्योति जगाते नजर आते हैं– 'हमारे युग का नायक' में।

"खत्म नहीं होंगे आदिम आदर्श
खत्म नहीं होगा स्वतंत्रता समानता का स्वप्न
मनुष्य अभी पूरा स्वतंत्र नहीं हुआ
समानता का लक्ष्य अभी पूर्ण नहीं हुआ
खत्म नहीं होगा स्वतंत्रता समानता का स्वप्न
जो उतना ही झूठ है उतना ही सच
जितना कि शून्य जितना अनन्त
तब खड़े होंगे करोड़ों करोड़ एक साथ
और चलेंगे सब प्रकाश की ओर"

कवि अरुण कमल जी ने साध्य की प्राप्ति में शरीर को साधना माना है। कारण कि शरीर है तो सभाएँ होंगी, लड़ाई होंगी और प्रेम होगा। जन–जीवन की बदहाली को खुशहाली में बदलने के लिए कौम्रेड का जिंदा रहना जरूरी है–

"ऐसी है बरसात कौम्रेड
चलिए वापस जिद्द न धरिए
जान रहेगी सभा भी होगी
इसी देह पर सब सिंगार।"

अरुण कमल जी कहन में प्रवीण है। दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाले शब्दों की रचना में वे अपवाद ही हैं। समाज से व्यक्ति को अलग–थलग करना उसकी मौत ही है और मौत के बाद फाँसी की माँग कवि को बेबुनियाद लगता है और कवि उसका पक्ष भी लेता है–

''खुदा के बंदो, उस हैवान में एक
अच्छाई भी थी,
वो यह कि आगे जब एक साथ सोये
उसने कभी अकेले मशहरी नहीं बाँधी।"

यथार्थवादी कविता का सर्जक अरुण कमल ने अपने–युग के तमाम अनछूये घटनाओं को, कथाओं को अपनी कविता का श्रृंगार बनाया है। इसी ताने–बाने को व्यक्त करते हुए कृष्ण मोहन झा 'नये इलाके में' पर लिखते हैं– "अरुण कमल के काव्य विकास पर विचार करते हुए उनका तीसरा संग्रह 'नये इलाके में' बहुत निर्णायक साबित होता है। यह वह संग्रह है जो उनके तीस–पैंतीस वर्षों में फैले काव्य–कर्म को दो भागों में बाँट देता है। इस संग्रह की कविताएँ अरुण जी की रचनाशीलता के नये इलाके का द्वार खोलती हैं। इसी संग्रह की कविताएँ पिछली कविताओं की सीमा को उजागर भी करती हैं। पहली बार इन्हीं कविताओं को पढ़कर पता चलता है कि 'अपनी केवल धार, और 'सबूत' के कवि अरुण तथा 'नये इलाके में' और 'पुतली में संसार' के कवि कमल। अस्सी के दशक के अरुण की आश्वस्ति छिन जाने के बाद संशय और निराशा में कमल का जन्म होता है।"[9]

'नये इलाके में खड़ा होने की जिद और वहाँ से कुछ हासिल करने की आकांक्षा कवि को ठूँठ बना दिया है। आशा–निराशा की ज्योति लिये भटकता रहा इधर–उधर, दर–बदर। आखिर हासिल क्या हुआ? यह प्रश्न चिह्न कवि के मन में है–

"नोक महीन से महीन
करने की जिद में इतना
छीलता गया पेन्सिल
कि अन्त में हासिल रहा
ठूँठ।"[10]

निष्कर्ष

अरुण कमल एक अत्यन्त संवेदनशील कवि हैं। नये इलाके में खड़े होकर अपनी संवेदनशीलता का स्पंदन महसूसना चाहते हैं। इसी का परिणाम है इनका तीसरा काव्य–संग्रह–'नये इलाके में'। नये इलाके की जमीन कहीं उर्वर तो कहीं मृतप्राय। मार्क्सवादी विचारधारा के प्रगतिशील कवि अरुण कमल उसी मृतप्राय जीवन को जिजीविषा देने हेतु नये इलाके में खड़े हैं। दूसरी ओर नये इलाके में प्रतिदिन कुछ–न–कुछ बदलता जा रहा है। इस कारण पहचान भी भ्रम बन गया है और स्मृति पर से विश्वास उठ गया है। यहाँ रोज कुछ बन रहा है तो कुछ घट रहा है। इस बढ़न और घटन के बीच खड़े हैं– अरुण कमल।

आज के बदलते परिवेश में लोग इतने भयाक्रांत हैं कि महल्ले में एक युवक की हत्या हत्यारा कर देता है और वह हत्यारा नाराज न हो जाय, इसलिए लोग अर्थी को कंधा तक नहीं देते हैं। केवल तीन कंधे नसीब हो पाता है चार कंधे के बजाय। यह बहुत बड़ी विडंबना है हमारे लिये, आनेवाली पीढ़ी के लिए।

संदर्भ सूची

1. कविता के नए प्रतिमान/नामवर सिंह, पृष्ठ 17
2. कविता और समय/अरुण कमल, पृष्ठ 209
3. संवेद/सं0 श्रीकिशन कालजयी, पृष्ठ 38
4. नये इलाके में/अरुण कमल, पृष्ठ 13
5. वही, पृष्ठ 15
6. वही, पृष्ठ 84
7. वही, पृष्ठ 55
8. कथोपकथन/अरुण कमल, पृष्ठ 81
9. संवेद/सं0 श्रीकिशन कालजयी, पृष्ठ 79
10. नये इलाके में/अरुण कमल, पृष्ठ 54

RRIJM 2015, All Rights Reserved